

سُورَةُ الرَّحْمَنِ

Surah 55 — Ar-Rahmaan (The Beneficent) · Medinan · 78 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बड़ा मेहरबान (खुदा)

2

عَلَّمَ الْقُرْآنَ

उसी ने कुरान की तालीम फरमाई

3

خَلَقَ الْإِنْسَانَ

उसी ने इन्सान को पैदा किया

4

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ

उसी ने उनको (अपना मतलब) बयान करना सिखाया

5

الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ

सूरज और चाँद एक मुकर्रर हिसाब से चल रहे हैं

6

وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ

और बूटियाँ बेलें, और दरख्त (उसी को) सजदा करते हैं

7

وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ

और उसी ने आसमान बुलन्द किया और तराजू (इन्साफ) को कायम किया

8

أَلَّا تَطْغَوْا^{۝۹} فِي الْمِيزَانِ

ताकि तुम लोग तराजू (से तौलने) में हद से तजाउज़ न करो

9

وَأَقِيمُوا^{۝۱०} الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا^{۝११} الْمِيزَانَ

और ईन्साफ के साथ ठीक तौलो और तौल कम न करो

10

وَالْأَرْضَ وَضَعَهَا لِلْأَنَامِ

और उसी ने लोगों के नफे के लिए ज़मीन बनायी

11

فِيهَا فُكْهَةٌ^{۝१२} وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ

कि उसमें मेवे और खजूर के दरख्त हैं जिसके खोशों में ग़िलाफ़ होते हैं

12

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ

और अनाज जिसके साथ भुस होता है और खुशबूदार फूल

13

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

तो (ऐ गिरोह जिन व इन्स) तुम दोनों अपने परवरदिगार की कौन कौन सी नेअमतों को न मानोगे

14

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَلٍ^{۝१४} كَالْفَخَّارِ

उसी ने इन्सान को ठीकरे की तरह खन खनाती हुई मिटटी से पैदा किया

15

وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ^{۝१५} مِّنْ نَّارٍ^{۝१६}

और उसी ने जिन्नात को आग के शोले से पैदा किया

16

فَبِأَيِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

तो (ऐ गिरोह जिन व इन्स) तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी नेअमतों से मुकरोगे

17

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ

वही जाड़े गर्मी के दोनों मशरिकों का मालिक है और दोनों मगरिबों का (भी) मालिक है

18

فَبِأَيِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

तो (ऐ जिनों) और (आदमियों) तुम अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत से इन्कार करोगे

19

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ

उसी ने दरिया बहाए जो बाहम मिल जाते हैं

20

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ ۚ لَا يَبْغِيَانِ

दो के दरमियान एक हद्दे फ़ासिल (आड़) है जिससे तजाउज़ नहीं कर सकते

21

فَبِأَيِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

तो (ऐ जिन व इन्स) तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत को झुठलाओगे

22

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ

इन दोनों दरियाओं से मोती और मूँगे निकलते हैं

23

فَبِأَيِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

(तो जिन व इन्स) तुम दोनों अपने परवरदिगार की कौन कौन सी नेअमत को न मानोगे

24

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَمِ

और जहाज़ जो दरिया में पहाड़ों की तरह ऊँचे खड़े रहते हैं उसी के हैं

25

فَبَأَيِّ آلاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

तो (ऐ जिन व इन्स) तुम अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत को झुठलाओगे

26

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۚ

जो (मखलूक) ज़मीन पर है सब फ़ना होने वाली है

27

وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَلِ وَالْإِكْرَامِ

और सिर्फ तुम्हारे परवरदिगार की ज़ात जो अज़मत और करामत वाली है बाक़ी रहेगी

28

فَبَأَيِّ آلاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

तो तुम दोनों अपने मालिक की किस किस नेअमत से इन्कार करोगे

29

يَسْأَلُهُ ۚ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ كُلٌّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۚ

और जितने लोग सारे आसमान व ज़मीन में हैं (सब) उसी से माँगते हैं वह हर रोज़ (हर वक्त) मखलूक के एक न एक काम में है

30

فَبَأَيِّ آلاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

तो तुम दोनों अपने सरपरस्त की कौन कौन सी नेअमत से मुकरोगे

31

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ الثَّقَلَانِ

(ऐ दोनों गिरोहों) हम अनक़रीब ही तुम्हारी तरफ़ मुतावज्जे होंगे

32

فَبِأَيِّ ءَالٍ رَّبِّكُمْ تَكْذِبَانِ

तो तुम दोनों अपने पालने वाले की किस किस नेअमत को न मानोगे

33

يَمْعَشَرِ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ إِنَّ أَسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا ۚ مِنْ أَقْطَارِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ
فَأَنْفُذُوا ۚ ۚ لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَنِ ۚ

ऐ गिरोह जिन व इन्स अगर तुममें कुदरत है कि आसमानों और ज़मीन के किनारों से (होकर कहीं) निकल (कर मौत या अज़ाब से भाग) सको तो निकल जाओ (मगर) तुम तो बग़ैर क़वत और ग़लबे के निकल ही नहीं सकते (हालाँ कि तुममें न क़वत है और न ही ग़लबा)

34

فَبِأَيِّ ءَالٍ رَّبِّكُمْ تَكْذِبَانِ

तो तुम अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत को झुटलाओगे

35

يُرْسَلُ عَلَيْكُمْ شُواظٌ ۚ مِنْ نَارٍ ۚ وَنَحَاسٌ ۚ فَلَا تَنْتَصِرَانِ

(गुनाहगार जिनों और आदमियों जहन्नुम में) तुम दोनो पर आग का सब्ज शोला और सियाह धुआँ छोड़ दिया जाएगा तो तुम दोनों (किस तरह) रोक नहीं सकोगे

36

فَبِأَيِّ ءَالٍ رَّبِّكُمْ تَكْذِبَانِ

फिर तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत से इन्कार करोगे

37

فَإِذَا أَنْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً ۚ كَالدِّهَانِ

फिर जब आसमान फट कर (क्रयामत में) तेल की तरह लाल हो जाएगा

38

فَبِأَيِّ ءَالٍ رَّبِّكُمْ تَكْذِبَانِ

तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत से मुकरोगे

39

فَيَوْمَئِذٍ ۚ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ ۚ إِنْسٌ ۚ وَلَا جَانٌّ ۚ

तो उस दिन न तो किसी इन्सान से उसके गुनाह के बारे में पूछा जाएगा न किसी जिन से

40

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

तो तुम दोनों अपने मालिक की किस किस नेअमत को न मानोगे

41

يُعْرِفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمِهِمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَصِي وَالْأَقْدَامِ

गुनाहगार लोग तो अपने चेहरों ही से पहचान लिए जाएँगे तो पेशानी के पटटे और पाँव पकड़े (जहन्नुम में डाल दिये जाएँगे)

42

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

आखिर तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत से इन्कार करोगे

43

هَذِهِ ۚ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ

(फिर उनसे कहा जाएगा) यही वह जहन्नुम है जिसे गुनाहगार लोग झुठलाया करते थे

44

يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَيَبِينُ حَمِيمٌ ۚ

ये लोग दोजख और हृद दरजा खौलते हुए पानी के दरमियान (बेक्रार दौड़ते) चक्कर लगाते फिरेंगे

45

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत को न मानोगे

46

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ ۚ جَنَّاتٌ

और जो शख्स अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरता रहा उसके लिए दो दो बाग हैं

47

فَبِأَيِّ ءَالٍ رَّبِّكُمْ تَكْذِبَانِ

तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की कौन कौन सी नेअमत से इन्कार करोगे

48

ذَوَاتَا أَفْنَانٍۙ

दोनों बाग़ (दरख्तों की) टहनियों से हरे भरे (मेवों से लदे) हुए

49

فَبِأَيِّ ءَالٍ رَّبِّكُمْ تَكْذِبَانِ

फिर दोनों अपने सरपरस्त की किस किस नेअमतों को झुठलाओगे

50

فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ

इन दोनों में दो चश्में जारी होंगे

51

فَبِأَيِّ ءَالٍ رَّبِّكُمْ تَكْذِبَانِ

तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत से मुकरोगे

52

فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فُكْهَةٍۙ زَوْجَانِ

इन दोनों बाग़ों में सब मेवे दो दो किस्म के होंगे

53

فَبِأَيِّ ءَالٍ رَّبِّكُمْ تَكْذِبَانِ

तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत से इन्कार करोगे

54

مُتَّكِئِينَ عَلَى فُرُشٍۙ بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍۙ ۗ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍۙ

यह लोग उन फ़र्शों पर जिनके असतर अतलस के होंगे तकिये लगाकर बैठे होंगे तो दोनों बाग़ों के मेवे (इस क़दर) क़रीब होंगे (कि अगर चाहे तो लगे हुए खालें)

55

فَبِأَيِّ ءَالٍ رَّبِّكُمْ تَكْذِبَانِ

तो तुम दोनों अपने मालिक की किस किस नेअमत को न मानोगे

56

فِيهِنَّ قَصِرْتُ الظَّرْفُ لَمْ يَطْمِئِنَّهُنَّ أَنَسٌ ۚ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۚ

इसमें (पाक दामन गैर की तरफ आँख उठा कर न देखने वाली औरतें होंगी जिनको उन से पहले न किसी इन्सान ने हाथ लगाया होगा) और जिन ने

57

فَبِأَيِّ ءَالٍ رَّبِّكُمْ تَكْذِبَانِ

तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की किन किन नेअमतों को झुठलाओगे

58

كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ

(ऐसी हसीन) गोया वह (मुजस्सिम) याकूत व मूँगे हैं

59

فَبِأَيِّ ءَالٍ رَّبِّكُمْ تَكْذِبَانِ

तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की किन किन नेअमतों से मुकरोगे

60

هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَنِ إِلَّا الْإِحْسَنُ

भला नेकी का बदला नेकी के सिवा कुछ और भी है

61

فَبِأَيِّ ءَالٍ رَّبِّكُمْ تَكْذِبَانِ

फिर तुम दोनों अपने मालिक की किस किस नेअमत को झुठलाओगे

62

وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَانِ

उन दोनों बागों के अलावा दो बाग और हैं

63

فَبِأَيِّ ءَالٍ رَّبِّكُمْ تَكْذِبَانِ

तो तुम दोनों अपने पालने वाले की किस किस नेअमत से इन्कार करोगे

64

مُدْهَامَّتَانِ

दोनों निहायत गहरे सब्ज व शादाब

65

فَبِأَيِّ ءَالٍ رَّبِّكُمْ تَكْذِبَانِ

तो तुम दोनों अपने सरपरस्त की किन किन नेअमतों को न मानोगे

66

فِيهِمَا عَيْنَانِ نَضَّاخَتَانِ

उन दोनों बागों में दो चश्में जोश मारते होंगे

67

فَبِأَيِّ ءَالٍ رَّبِّكُمْ تَكْذِبَانِ

तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत से मुकरोगे

68

فِيهِمَا فُكْهَةٌ ۚ وَنَخْلٌ ۚ وَرُمَانٌ ۚ

उन दोनों में मेवें हैं खुरमें और अनार

69

فَبِأَيِّ ءَالٍ رَّبِّكُمْ تَكْذِبَانِ

तो तुम दोनों अपने मालिक की किन किन नेअमतों को झुटलाओगे

70

فِيهِنَّ خَيْرٌ حِسَانٌ ۚ

उन बागों में खुश खुल्क और खूबसूरत औरतें होंगी

71

فَبِأَيِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

तो तुम दोनों अपने मालिक की किन किन नेअमतों को झुठलाओगे

72

حُورٌۭ ۚ مَّقْصُورَتٌۭ ۚ فِي الْخِيَامِ

वह हूरें हैं जो खेमों में छुपी बैठी हैं

73

فَبِأَيِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

फिर तुम दोनों अपने परवरदिगार की कौन कौन सी नेअमत से इन्कार करोगे

74

لَمْ يَطْمِئْنُوهُنَّ ۖ اِنْسٌۭ ۚ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّۭ ۚ

उनसे पहले उनको किसी इन्सान ने उनको छुआ तक नहीं और न जिन ने

75

فَبِأَيِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

फिर तुम दोनों अपने मालिक की किस किस नेअमत से मुकरोगे

76

مُتَّكِنِينَ عَلَى رَفْرَفٍ خُضِرٍۭ ۚ وَعَبَقَرِيِّۭ حِسَانٍۭ ۚ

ये लोग सब्ज कालीनों और नफीस व हसीन मसनदों पर तकिए लगाए (बैठे) होंगे

77

فَبِأَيِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

फिर तुम अपने परवरदिगार की किन किन नेअमतों से इन्कार करोगे

78

تَبْرَكَ اَسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلْلِ وَالْاِكْرَامِ

(ऐ रसूल) तुम्हारा परवरदिगार जो साहिबे जलाल व करामत है उसी का नाम बड़ा बाबरकत है